[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

संजीव रिफ्रेशर

हिन्दी

(कक्षा 6 के विद्यार्थियों के लिए)

मुख्य विशेषताएँ

1. सभी कविताओं का कविता सार
2. सम्पूर्ण कविताओं का कठिन शब्दार्थ सहित भावार्थ
3. काव्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक प्रश्न एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न
4. सभी गद्य पाठों का सार
5. सभी गद्य पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
6. महत्त्वपूर्ण गद्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक प्रश्न एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न
7. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
8. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
9. व्याकरण
10. पत्र-लेखन
11. निबन्ध-लेखन
12. अनुच्छेद-लेखन
13. अपठित बोध
14. सूचना-लेखन
15. संवाद-लेखन

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

जयपुर

मूल्य :
₹ 180.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

❊ ❊ ❊ ❊

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

वसंत-1

1.	वह चिड़िया जो	(केदारनाथ अग्रवाल)	1-7
2.	बचपन	(कृष्णा सोबती)	8-17
3.	नादान दोस्त	(प्रेमचंद)	18-28
4.	चाँद से थोड़ी-सी गप्पें	(शमशेर बहादुर सिंह)	29-37
5.	साथी हाथ बढ़ाना	(साहिर लुधियानवी)	38-46
6.	ऐसे-ऐसे	(विष्णु प्रभाकर)	47-55
7.	टिकट-अलबम	(सुंदरा रामस्वामी)	56-66
8.	झाँसी की रानी	(सुभद्रा कुमारी चौहान)	67-90
9.	जो देखकर भी नहीं देखते	(हेलेन केलर)	91-98
10.	संसार पुस्तक है	(जवाहरलाल नेहरू)	99-106
11.	मैं सबसे छोटी होऊँ	(सुमित्रानंदन पंत)	107-114
12.	लोकगीत	(भगवतशरण उपाध्याय)	115-124
13.	नौकर	(अनु बंद्योपाध्याय)	125-137
14.	वन के मार्ग में	(तुलसीदास)	138-142

बाल रामकथा
(पूरक पाठ्यपुस्तक)

1.	अवधपुरी में राम	143-145
2.	जंगल और जनकपुर	145-147
3.	दो वरदान	147-149
4.	राम का वन-गमन	149-151
5.	चित्रकूट में भरत	151-153
6.	दंडक वन में दस वर्ष	153-155
7.	सोने का हिरण	155-157

8.	सीता की खोज	157–159
9.	राम और सुग्रीव	159–161
10.	लंका में हनुमान	161–163
11.	लंका विजय	163–166
12.	राम का राज्याभिषेक	166–168
	पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर	168–171

व्याकरण

1.	संज्ञा	172–174
2.	संज्ञा के विकारक तत्त्व : लिंग	174–177
3.	संज्ञा के विकारक तत्त्व : वचन	177–180
4.	संज्ञा के विकारक तत्त्व : कारक	180–182
5.	सर्वनाम	182–183
6.	विशेषण	183–186
7.	क्रिया	186–189
8.	काल	189–190
9.	क्रियाविशेषण	191–192
10.	सम्बन्धबोधक अव्यय	192–193
11.	समुच्चयबोधक अव्यय	193–194
12.	विस्मयादिबोधक अव्यय	194–195
13.	समास	195–197
14.	सन्धि	197–199
15.	उपसर्ग	199–200
16.	प्रत्यय	200–202
17.	तत्सम-तद्भव	202–203
18.	विलोम शब्द	203–204
19.	पर्यायवाची	205–206
20.	युग्म-शब्द	206–209

21.	एकार्थी शब्द व अनेकार्थी शब्द	209–211
22.	शुद्ध शब्द एवं अशुद्ध वाक्य	211–216
23.	वाक्य परिचय	216–218
24.	विराम चिह्न	218–220
25.	मुहावरे	220–225
26.	कहावतें या लोकोक्तियाँ	225–227

रचना–भाग

1.	पत्र–लेखन	228–236
2.	निबन्ध–लेखन	237–250
3.	अनुच्छेद–लेखन	251–254
4.	अपठित बोध	255–265
5.	सूचना–लेखन	266–267
6.	संवाद–लेखन	268–269

हिन्दी कक्षा-6

वसंत-1

पाठ 1

वह चिड़िया जो

केदारनाथ अग्रवाल

कविता का सार

'वह चिड़िया जो' शीर्षक कविता कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित है। कवि बताता है कि नीले पंखों वाली छोटी चिड़िया सन्तोषी स्वभाव की है। वह अन्न से बहुत प्यार करती है। वह कंठ खोलकर अपनेपन से वन में रसीले स्वर में गाती है। उस छोटी मुँहबोली चिड़िया को एकान्त बहुत प्रिय है। वह उफनती नदी से मोती जैसी जल की बूँदें चोंच में भर लाती है। उसे स्वयं पर गर्व है और वह नदी से बहुत प्यार करती है।

काव्यांशों की व्याख्या—

(1)

वह चिड़िया जो—
चोंच मारकर
दूध-भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

कठिन शब्दार्थ—दूध भरे = कच्चे, अधपके दाने। **जुंडी** = जौ-बाजरे की कच्ची बालियाँ। **रस** = आनन्द, स्वाद।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक वसन्त भाग-1 की 'वह चिड़िया जो' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल हैं। इसमें नीले पंखों वाली चिड़िया के स्वभाव आदि के बारे में बताया गया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि वह चिड़िया जिसके पंख नीले हैं, वह अपनी चोंच से जुंडी (अधपके जौ-बाजरे की बालियों) के दूध से भरे दानों को रुचि से खाती है। वह उन दूध भरे कच्चे दानों को रस लेकर (स्वादपूर्वक) खाती है। वह चिड़िया छोटी और संतोष करने वाली है। वह कहती है कि मुझे अनाज के दाने बहुत प्रिय हैं।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

(i) बहुवैकल्पिक प्रश्न—

1. पद्यांश में वर्णित चिड़िया खाती है—
   (क) गेहूँ की बालियों के दूध भरे कच्चे दाने (ख) जुंडी की बालियों के दूध भरे कच्चे दाने
   (ग) अन्न की बालियों के दूध भरे कच्चे दाने (घ) अनार के दूध भरे कच्चे दाने। ( )
2. पद्यांश में वर्णित चिड़िया कैसी बतायी गई है?
   (क) काली चिड़िया (ख) भूरी चिड़िया (ग) नीली चिड़िया (घ) छोटी, संतोषी चिड़िया ( )

3. चिड़िया का स्वभाव कैसा बताया गया है?
(क) लालची (ख) बड़बोली (ग) संतोषी (घ) आलसी ( )

उत्तर—1. (ख) 2. (घ) 3. (ग)

(ii) अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. चिड़िया जुंडी के दाने कैसे खाती है?
उत्तर—चिड़िया जुंडी के दाने चोंच मारकर रुचि से खाती है।
प्रश्न 2. चिड़िया को क्या पसन्द है?
उत्तर—चिड़िया को जौ व बाजरे के दूध से भरे कच्चे दाने खाना पसंद है।
प्रश्न 3. चिड़िया के पंखों का रंग कैसा है?
उत्तर—चिड़िया के पंखों का रंग नीला है।
प्रश्न 4. पद्यांश में चिड़िया की क्या विशेषता बतायी गई है?
उत्तर—पद्यांश में चिड़िया की विशेषता आकार में छोटी तथा स्वभाव में संतोषी बतायी गई है।

(2)

वह चिड़िया जो—
कंठ खोलकर
बूढ़े वन-बाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

कठिन शब्दार्थ—कंठ = गला। **बूढ़े** = पुराने। **वन-बाबा** = जंगल रूपी बाबा। **की खातिर** = के लिए। **रस उँडेलकर** = बहुत मीठी आवाज में। **विजन** = एकांत, जहाँ कोई न रहता हो।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक वसन्त भाग-1 के 'वह चिड़िया जो' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल हैं। इसमें चिड़िया द्वारा कंठ खोलकर मधुर स्वर में गाने तथा आकाश में मुक्त रूप से उड़ने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि वह चिड़िया गला खोलकर बहुत ही मधुर स्वर में बूढ़े वन-बाबा को खुश करने के लिए गाती है। वह छोटी-सी चिड़िया जंगल-बाबा की मुँह बोली बेटी के समान है। उसके नीले पंख अत्यधिक सुन्दर हैं। वह कहती है कि मुझे एकांत (जंगल) से बहुत प्यार है, अर्थात् उसे स्वतंत्र रहना बहुत अच्छा लगता है।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

(i) बहुवैकल्पिक प्रश्न—

1. कंठ खोलकर कौन गाती है?
(क) वन-बाबा (ख) चिड़िया (ग) मोरनी (घ) कोयल ( )
2. चिड़िया किसके खातिर गाती है?
(क) अपने साथियों की खातिर (ख) दुनिया की खातिर
(ग) वन-बाबा की खातिर (घ) खुद की खातिर ( )
3. रस उँडेलकर गाने का क्या अर्थ है?
(क) मीठे स्वर में गाना (ख) ऊँचे स्वर में गाना
(ग) मद्धिम स्वर में गाना (घ) कठोर स्वर में गाना ( )

उत्तर—1. (ख) 2. (ग) 3. (क)

(ii) अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. चिड़िया का गान कैसा है?

बाल रामकथा

पूरक पाठ्यपुस्तक

पाठ 1

अवधपुरी में राम

पाठ का सार

सरयू नदी के किनारे अयोध्या नगर था। इसकी इमारतें भव्य थीं। इसकी सड़कें चौड़ी व सुन्दर बाग-बगीचे थे। यहाँ कोई दु:ख या विपन्नता नहीं थी। अयोध्या कोसल राज्य की राजधानी थी। यहाँ के राजा दशरथ कुशल योद्धा व प्रजापालक न्यायप्रिय शासक थे। उन्हें एक ही दु:ख था कि उनके कोई संतान नहीं थी।

उन्होंने अपने उत्तराधिकारी की चिंता के सम्बन्ध में मुनि वशिष्ठ से चर्चा की। उन्होंने महाराज दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ करने की सलाह दी। ऋष्यशृंग की देखरेख में यज्ञ पूरा हुआ। तीनों रानियाँ पुत्रवती हुईं। कौशल्या ने नवमी के दिन राम को, रानी सुमित्रा ने दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न तथा कैकेयी ने भरत को जन्म दिया। चारों राजकुमार बहुत सुन्दर थे। उन्होंने समय आने पर ज्ञान अर्जित किया। राजा दशरथ को राम सबसे प्रिय थे।

एक समय जब राजकुमारों के विवाह के बारे में मंत्रणा चल रही थी उसी समय महर्षि विश्वामित्र वहाँ पधारे। उन्होंने राजा दशरथ से कहा कि मैं सिद्धि के लिए यज्ञ कर रहा हूँ। उस यज्ञ में राक्षस आकर बाधा डाल रहे हैं। इसलिए यज्ञ की रक्षा के लिए अपने ज्येष्ठ पुत्र को मुझे दे दें ताकि यज्ञ पूरा हो सके। इस सम्बन्ध में जब मुनि वशिष्ठ ने राजा दशरथ को समझाया तब वे मान गये। राजा दशरथ ने राम के साथ लक्ष्मण को भी भेज दिया।

कठिन शब्दार्थ—

(पेज 1)—**दर्शनीय** = देखने योग्य। **भव्यता** = सुन्दरता। **लबालब** = पूरे भरे हुए। **संपन्न** = धनवान। **विपन्नता** = गरीबी। **विलक्षण** = अनोखा। **मनोरम** = सुन्दर। **उत्तराधिकारी** = वारिस, पिता की मृत्यु के बाद सम्पत्ति आदि का हकदार। **मर्यादा** = नियम। **सदाचारी** = अच्छे चाल-चलन वाला। **यशस्वी** = प्रसिद्ध। **सूना-सूना** = खाली-खाली।

(पेज 3)—**पुत्रेष्टि** = पुत्र की कामना। **निमंत्रित** = आमंत्रित। **मंत्रोच्चार** = मन्त्रों का उच्चारण। **मंगल गीत** = बधाई के गीत। **मनोकामना** = मन की इच्छा। **समारोह** = जलसा, आयोजन। **सुदर्शन** = देखने में सुन्दर। **पारंगत** = चतुर, दक्ष। **सर्वोपरि** = सबसे ऊपर। **विवेक** = अच्छे-बुरे की पहचान। **शालीनता** = अच्छे चाल-चलन एवं व्यवहार वाला होना। **न्यायप्रियता** = न्याय से प्रेम होना। **ज्येष्ठ** = बड़ा।

(पेज 4)—**परिजन** = रिश्तेदार। **हिचकना** = संकोच करना। **गहन मंत्रणा** = गंभीर सोच-विचार। **अगवानी करना** = स्वागत करना। **सिद्धि** = किसी कार्य में विशेष सफलता प्राप्त करना। **अनुष्ठान** = धार्मिक कार्य। **अचकचाना** = घबरा जाना। **दुविधा** = असमंजस। **सन्नाटा** = चुप्पी। **संज्ञा-शून्य** = बेहोश।

(पेज 5)—सशंकित = शंका से पूरित। **अनिष्ट** = हानि। **प्रतिक्रिया** = किसी क्रिया के परिणामस्वरूप की गई क्रिया। **खंडित** = भंग होना, टूटना। **सकते में आना** = भौचक्का रह जाना। **विछोह** = वियोग। **सिद्ध पुरुष** = वह पुरुष जिसने किसी विशेष कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली हो।

(पेज 6)—आग्रह = अनुरोध, निवेदन। **माहौल** = वातावरण। **स्वस्तिवचन** = मंगल वचन, आशीर्वाद के बोल। **भावुक** = भावों से भर जाना। **बीहड़** = ऊबड़-खाबड़, घना। **तुषीर** = तरकश, बाण रखने का पात्र।

महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. अयोध्या की विशेषताओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—सरयू नदी के किनारे पर स्थित अयोध्या कोसल राज्य की राजधानी थी। यह नगर अति सुन्दर और दर्शनीय था। वहाँ भव्य राजमहल, आलीशान इमारतें थीं, सड़कें चौड़ी थीं। सुन्दर बाग-बगीचे थे। खेतों में हरियाली लहराती थी तथा सर्वत्र सम्पन्नता बिखरी हुई थी।

प्रश्न 2. राजा दशरथ एवं रानियों की चिन्ता किस कारण थी? क्या उनकी चिन्ता जायज थी?

उत्तर—राजा दशरथ एवं रानियों की चिन्ता इस कारण थी कि उनके कोई संतान नहीं थी। उनकी उम्र लगातार बढ़ रही थी। संतान की कमी के कारण उन्हें जीवन सूना-सूना लगता था। इस कारण उनकी चिन्ता जायज थी। उनके यहाँ न कोई उनका उत्तराधिकारी था और न वंश को चलाने वाला था।

प्रश्न 3. मुनि वशिष्ठ ने राजा दशरथ को सन्तान प्राप्ति का क्या उपाय बताया?

उत्तर—मुनि वशिष्ठ ने राजा को संतान प्राप्ति का उपाय बताया कि पुत्रेष्टि यज्ञ करो। पुत्रेष्टि यज्ञ करने से संतान प्राप्त होगी और आपकी इच्छा अवश्य पूरी होगी।

प्रश्न 4. गुरु वशिष्ठ ने राजा दशरथ को क्या समझाया था?

उत्तर—गुरु वशिष्ठ ने राजा दशरथ को समझाया कि महर्षि विश्वामित्र सिद्ध पुरुष हैं, अनेक गुप्त विद्याओं के जानकार हैं। राम उनसे अनेक विद्याएँ सीख सकेंगे। अत: राम को महर्षि के साथ जाने दें।

प्रश्न 5. विश्वामित्र राजा दशरथ के पास क्यों आये थे? उन्होंने राजा दशरथ से क्या कहा था?

उत्तर—महर्षि विश्वामित्र सिद्धि के लिए यज्ञ कर रहे थे। अनुष्ठान लगभग पूरा होने को था लेकिन दो राक्षस उसमें विघ्न डाल रहे थे। उन राक्षसों को केवल राम ही मार सकते थे। इसलिए वे राजा दशरथ के पास से राम को लेने के लिए आये थे।

प्रश्न 6. राजा दशरथ ने राम को महर्षि विश्वामित्र के साथ न भेजने के संबंध में क्या कहा?

उत्तर—राजा दशरथ ने कहा कि—"मेरा राम तो अभी सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ है। वह राक्षसों से कैसे लड़ेगा? राक्षस तो मायावी हैं, वह उन्हें कैसे मारेगा? इससे तो अच्छा यही होगा कि आप मेरी सेना ले जाएँ। मैं स्वयं आपके साथ चलूँ और राक्षसों से युद्ध करूँ। मैं राम के बिना नहीं रह सकता, आप उसे मत ले जाइए।"

प्रश्न 7. विश्वामित्र कौन थे?

उत्तर—विश्वामित्र स्वयं राजा थे। पर उन्होंने राजपाट छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लिया था और जंगल में जाकर आश्रम में रहने लगे थे। उन्होंने अपने आश्रम का नाम सिद्धाश्रम रखा था।

बहुवैकल्पिक प्रश्न—

प्रश्न 8. 'पुत्रेष्टि यज्ञ' किनकी देखरेख में हुआ था?

(क) ऋषि वाल्मीकि की (ख) ऋषि वशिष्ठ की
(ग) ऋषि विश्वामित्र की (घ) तपस्वी ऋष्यशृंग की। ( )

प्रश्न 9. राजा दशरथ का सबसे प्रिय पुत्र कौन था?

(क) राम (ख) लक्ष्मण
(ग) शत्रुघ्न (घ) भरत। ( )

व्याकरण

1. संज्ञा

प्रश्न 1. संज्ञा किसे कहते हैं? उसके कितने भेद होते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—संज्ञा की परिभाषा—जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान अथवा गुण आदि का नाम मालूम हो, उसे संज्ञा कहते हैं। जैसे—पुस्तक, राम, जयपुर, सच्चाई आदि।

हिन्दी में संज्ञा के मुख्य तीन भेद होते हैं—

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञा से किसी एक विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—सुभाषचन्द्र बोस, सचिन तेंदुलकर, हिमालय, नैनीताल, रामायण, लाल किला आदि।

(2) जातिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञा शब्द से एक ही जाति के सब प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—युवक, गाय, नगर, सड़क, नदी, पेड़, लकड़ी आदि।

(3) भाववाचक संज्ञा—जिस संज्ञा शब्द से किसी भाव, गुण, अवस्था या क्रिया के व्यापार आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—दया, प्रेम (भाव), मिठास, कड़वाहट (गुण), बचपन, बुढ़ापा (अवस्था), गिरावट, लिखावट (क्रिया का व्यापार) आदि।

कुछ विद्वान अंग्रेजी व्याकरण की तरह संज्ञा के दो अन्य भेद—(i) समूहवाचक संज्ञा और (ii) द्रव्यवाचक संज्ञा भी मानते हैं जबकि हिन्दी व्याकरण में इन दोनों संज्ञा भेदों को जातिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत ही माना जाता है। फिर भी अध्ययन की दृष्टि से इन दोनों भेदों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

(i) समूहवाचक संज्ञा—जो संज्ञा शब्द प्राणियों व वस्तुओं के समूह का बोध कराते हैं, उन्हें 'समूहवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे—कक्षा, भीड़, सेना, दल, परिवार, गिरोह आदि।

(ii) द्रव्यवाचक संज्ञा—वे संज्ञा शब्द जो माप-तोल वाले द्रव्य पदार्थ या धातु का बोध कराते हैं, उन्हें 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे—तेल, घी, दूध, गेहूँ, चावल, सोना, चाँदी आदि।

प्रश्न 2. भाववाचक संज्ञाएँ कितने प्रकार के शब्दों से बनती हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित चार प्रकार के विकारी शब्दों से बनती हैं—(i) जातिवाचक संज्ञा से (ii) सर्वनाम से (iii) विशेषण से (iv) क्रिया से; जैसे—

(i) जातिवाचक संज्ञा से—

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य	मनुष्यता	भाई	भाईचारा
बच्चा	बचपन	चोर	चोरी
राष्ट्र	राष्ट्रीयता	मानव	मानवता
मित्र	मित्रता	नेता	नेतृत्व
जवान	जवानी	शिशु	शैशव

(ii) सर्वनाम से—

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक सज्ञा
अपना	अपनत्व, अपनापन	अहं	अहंकार
मम	ममत्व	स्व	स्वत्व
निज	निजत्व	सर्व	सर्वस्व

(iii) विशेषण से

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
सुन्दर	सुन्दरता	ताजा	ताजगी
मीठा	मिठास	भोला	भोलापन
अच्छा	अच्छाई	मोटा	मोटापन
भला	भलाई	ऊँचा	ऊँचाई
हरा	हरियाली	मूर्ख	मूर्खता
नीच	नीचता	कम	कमी
गरीब	गरीबी	भूखा	भूख
सज्जन	सज्जनता	वीर	वीरता
लघु	लघुता	लाल	लाली
धीर	धैर्य	मधु	माधुर्य

(iv) क्रिया से

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
मारना	मार	पढ़ना	पढ़ाई
सीखना	सीख	बहना	बहाव
उठना	उठान	पहनना	पहनावा
जागना	जागरण	माँगना	माँग
हँसना	हँसी	मिलना	मिलान
लिखना	लेख	कूदना	कूद

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों को सही शब्दों से पूरा कीजिए—

(i) सरल रूप में नाम को ही.....कहा जाता है।

(ii) हिन्दी में मुख्यतः संज्ञा..... की होती हैं।

(iii) हिन्दी व्याकरण में.....भेदों को जातिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत ही माना जाता है।

(iv) ''आज हमारे देश में जयचन्दों की कमी नहीं है।'' वाक्य में जयचन्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है तो जयचन्दों..... संज्ञा है।

(v) वाजपेयीजी बहुत अच्छे उपन्यासकार थे। यहाँ 'वाजपेयी' जातिवाचक है लेकिन व्यक्ति विशेष की दृष्टि से 'वाजपेयी'.....संज्ञा है।

उत्तर—(i) संज्ञा (ii) तीन प्रकार (iii) समूहवाचक, द्रव्यवाचक (iv) जातिवाचक (v) व्यक्तिवाचक।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञाएँ बताइए—

(i) बूढ़ा..... (ii) भूखा ..... (iii) क्रोध ..... (iv) मजदूर ..... (v) घबराना..... (vi) पुरुष.....(vii) मनुष्य..... (viii) अहं..... (ix) लघु..... (x) कहना.....।

उत्तर—(i) बुढ़ापा (ii) भूख (iii) क्रोधी (iv) मजदूरी (v) घबराहट (vi) पौरुष (vii) मनुष्यता (viii) अहंकार (ix) लघुता (x) कहावत।